

Tazkirae Imam Ahmed Raza (Gujarati)



મહારે આ'લા અહલે

# تذکیر اہم احمد رضا

رضائلہ تعالیٰ علیہ

अभीरे अहले सुन्नत का सभ से पहला रिसावा

- |                                |    |                                |    |
|--------------------------------|----|--------------------------------|----|
| ✽ બચપન કી એક હિકાયત            | 04 | ✽ દોરાને મીલાદ બેઠને કા અન્દાઝ | 14 |
| ✽ હૈરત અંગોઝ કુવ્વતે હાફિઝા    | 07 | ✽ સોને કા મુન્ફરિદ અન્દાઝ      | 14 |
| ✽ સિર્ફ એક માહ મેં હિફઝે કુરઆન | 08 | ✽ ટ્રેન રુકી રહી !             | 15 |
| ✽ બેદારી મેં દીદારે મુસ્તફા    | 11 | ✽ દરબારે રિસાલત મેં ઇન્તિઝાર   | 19 |



સૈને તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે ઇ'વતે ઇસ્લામી, હાઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ

મુહમ્મદ ઇબ્વાસ અત્તાર કાદિરી ર-મવી

بانت رازي

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ  
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

### क़िताब पढने की दुआ

अज : शैभे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते ईस्लामी, हजरत अल्लामा  
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईल्य़ास अत्तार कादिरि र-उवी दَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه  
दीनी क़िताब या ईस्लामी सबक पढने से पढले ज़ैल में दी दुइ दुआ पढ  
लीजिये اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا دَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह ख़ुल्ल और ख़ुल्ल ! हम पर ईल्म व ख़िकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी  
रहमत नाज़िल करमा ! ऐ अ-उमत और भुलुर्गा वाले ! (المستطرف ج 1، اصدار الفكر بيروت)  
नोट : अव्वल आबिर अेक अेक बार दुइद शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिबे गमे मदीना

व बकीअ

व मस्किरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



### “तअकिरअे ँमाम अहमद रअ”

येह रिसाला (तअकिरअे ँमाम अहमद रअ)

शैभे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते ईस्लामी हजरत अल्लामा  
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईल्य़ास अत्तार कादिरि र-उवी ज़ियाई दَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه  
ने उईदू ज़बान में तहरीर करमाया है.

मजलसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी) ने ईस रिसाले को गुजराती रस्मुल  
अत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-अतुल मदीना से शाअेअ करवाया  
है. ईस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाअें तो मजलसे तराजिम को (अ जरीअअे  
मक्तूब, ई-मेईल या SMS ) मुत्तलअ करमा कर सवाब कमाईये.

राबिता : मजलसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी)

मक-त-अतुल मदीना

सिलेकटेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा,

अहमदआबाद-1, गुजरात, ईन्डिया

MO. 9374031409 E-mail : translaionmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## मेरी जिन्दगी का पहला रिसाला

अज : सगे मदीना मुहम्मद ँल्यास कादिरि २-जवी عَفَى عَنْهُ

मुजे अयपन डी से आ'ला डजरत ँमाम अडमड रजा ढान رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ سے महब्बत डो गँ थी. “तजकिरअे अडमड रजा अ सिस्सिलअे यौमे रजा” मेरी जिन्दगी का पहला रिसाला डै. जो के में ने 25 स-इरुल मुजइर 1393 डि. (अ मुताभिक 31-3-1973) को “यौमे रजा” के भौकअ पर जारी किया था. الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ ँस के अहुत सारे अडीशन शाअेअ हुअे डें, वकतन इ वकतन ँस में तरामीम की डें, रौजअे रसूल الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ की याद दलाने वाले दस्त-अत ली उन दिनों नहीं थे आ'द में जेहन अना मगर आभिरि सइडे पर अतौरे यादगार तारीअ पुरानी रभी डै, अद्लाड عَزَّ وَجَلَّ मेरी ँस काविश को कबूल इरमाअे और ँस मुप्तसर से रिसाले को आशिकाने रसूल के लिये नइअ अष्श अनाअे. अद्लाड तआ-२-क व तआला अ तुडैले आ'ला डजरत मेरी और रिसाले के डर सुन्नी कारी की अे डिसाअ मगिरत करे.

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तालिअे गमे मदीना व

अकीअ व मगिरत व

अे डिसाअ जन्तुल

इरदौस में आका

का पडोस



25 मुडर्रमुल डराम 1433 डि.

21-12-2011

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

**तळक़िरअे ँभाम अहमद रज़ा** رَحْمَةُ اللَّهِ  
تَعَالَى عَلَيْهِ

शैतान लाभ सुस्ती ढिलाअे मगर न निय्यते सवाभ येड रिसाला।  
(20 सङ्खत) पूरा पढ कर अपनी दुन्या व आभिरत का भला कीजिये।

### दुइद शरीफ़ की इमीलत

रहमते आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, शफीअे  
उमम, रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने शफ़ाअत  
निशान है : “जे मुज पर दुइदे पाक पढेगा में उस की शफ़ाअत  
इरमाउंगा.” (الْقَوْلُ الْبَدِيع ص २६१ مؤسسة الريان بيروت)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### विलादते जा सआदत

मेरे आका आ'ला उजरत, ँभामे अहले सुन्नत, वलिय्ये  
ने'मत, अजीमुल ब-र-कत, अजीमुल मर्तबत, परवानअे शम्अे  
रिसालत, मुजद्विदे टीनो मिल्दत, डामिये सुन्नत, माडिये  
भिदअत, आदिमे शरीअत, पीरे तरीकत, बाईसो जैरो  
ब-र-कत, उजरते अदलामा भौलाना अलडाज अल डाइज अल  
कारी शाह ँभाम अहमद रज़ा ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ की विलादते

करमाने मुस्तफा صلى الله عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद पाक न पढा तहकीक वाड  
अडमद हो गया. (उरुदा)

आ सआदत बरेली शरीफ़ के महल्ला जसूली में 10 शव्वालुल मुकर्रम  
1272 सि.हि. बरोजे हफ़ता अ वक्ते जोहर मुताबिक 14 जून 1856  
ई. को हुई. सने पैदाईश के अे'तिबार से आप का नाम अल मुफ्तार  
(1272 हि.) है. (हयाते आ'ला हजरत, जि. 1, स. 58, मक-त-अतुल मदीना,  
आबुल मदीना कराची)

### आ'ला हजरत का सने विलादत

मेरे आका आ'ला हजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपना सने  
विलादत पारह 28 सू-रतुल मुजा-दलह की आयत नम्बर 22 से  
निकाला है. इस आयते करीमा के ईल्मे अब्जद के अे'तिबार के मुताबिक  
1272 अदद हैं और हिजरी साल के हिसाब से येही आप का सने  
विलादत है. युनान्ये मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ मल्जूआते आ'ला  
हजरत सफ़हा 410 पर है : विलादत की तारीखों का जिक्र था और इस  
पर (सय्यिदी आ'ला हजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने) ईशादिर इरमाया :  
بِحَمْدِ اللهِ تَعَالَى मेरी विलादत की तारीख इस आयते करीमा में है :

أُولَئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمْ

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : येह हैं  
जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान

الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ مِنْهُ  
(प, 28, المجادل: 22)

नकश इरमा दिया और अपनी तरफ़  
की इह से इन की मदद की.

आप का नामे मुबारक मुहम्मद है और आप के दादा ने  
अडमद रजा कल कर पुकारा और इसी नाम से मशहूर हुअे.

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

किरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतबा सुभ और दस भरतबा शाम दुइदे पाक पढा  
(उसे कियामत के दिन मेरी शक़ाअत मिलेगी. (अल-रौद)

## हेरत अंगेज बयपन

उमूमन हर जमाने के बच्चों का वोही हाल होता है जो आज कल बच्चों का है के सात आठ साल तक तो उन्हें किसी बात का छोश नहीं होता और न ही वोह किसी बात की तह तक पछोंच सकते हैं, मगर आ'ला हजरत مُحَمَّدُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का बयपन बडी अहम्मियत का डामिल था. कमसिनी, जुई-साली (या'नी बयपन) और कम उम्री में छोश मन्दी और कुव्वते हाकिमा का येह आलम था के साढे यार साल की नन्ही सी उम्र में कुरआने मज्जद नाजिरा मुकम्मल पढने की ने'मत से भारयाब हो गअे. छ साल के थे के रबीउल अव्वल के मुबारक महीने में मिम्बर पर जल्वा अइरोज हो कर मीलाहुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मौजूअ पर अेक बहुत बडे ँजतिमाअ में निहायत पुर मज्ज तकरीर इरमा कर उ-लमाअे किराम और मशा'एे ँजाम से तइसीन व आइरीन की दाद वुसूल की. ँसी उम्र में आप ने बगदाद शरीफ़ के बारे में सप्त मा'लूम कर ली इर ता दमे हयात बल्दअे मुबा-र-कअे गौसे आ'जम عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (या'नी गौसे आ'जम के मुबारक शहर) की तरफ़ पाउं न इैलाअे. नमाज से तो ँशक की हद तक लगाव था युनान्थे नमाजे पन्जगाना बा जमाअत तकबीरे उला का तहइकुज करते हुअे मस्जिद में जा कर अदा इरमाया करते, जब कभी किसी भातून का सामना होता तो इौरन नजरें नीथी करते हुअे सर जुका लिया करते, गोया के सुन्नते मुस्तफ़ा النَّبِيِّ النَّبِيِّ وَالسَّلَام का आप पर ग-लबा था जिस का ँजहार करते हुअे हुजूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की षिदमते आलिया में यूं सलाम पेश करते हैं :

करमाने मुस्तकः صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुज पर दुरद शरीक न पढा उस ने जका की. (मुराज)

नीची नजरो की शर्मो डया पर दुरद

ठोची बीनी की रिइअत पे लाभो सलाम

आ'ला डजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने लडक-पन में तक्वा को ँस कदर अपना लिया था के यलते वक्त कदमों की आडट तक सुनाँ न देती थी. सात साल के थे के माडे र-मजानुल मुबारक में रोजे रभने शुरूअ कर दिये. (दीबाया इतावा र-जविय्या, जि. 30, स. 16)

### बयपन की अेक हिकायत

जनाबे सय्यिद अय्यूब अली शाह साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हें के बयपन में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को घर पर अेक मौलवी साहिब कुरआने मज्द पढाने आया करते थे. अेक रोज का जिक्र है के मौलवी साहिब किसी आयते करीमा में बार बार अेक लइज आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को बताते थे मगर आप रَحْمَةُ اللهِ تَعालَى عَلَيْهِ की जभाने मुबारक से नडीं निकलता था वोड "जबर" बताते थे आप "जेर" पढते थे येड केइइयत जभ आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के दादाजान डजरते मौलाना रज अली भान साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने देभी तो डुजूर (या'नी आ'ला डजरत) को अपने पास बुलाया और कलामे पाक मंगवा कर देभा तो उस में कातिब ने ग-लती से जेर की जगड जबर लिख दिया था, या'नी जे आ'ला डजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की जभान से निकलता था वोड सडीड था. आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के दादा ने पूछा के बेटे जिस तरड मौलवी साहिब पढाते थे तुम उसी तरड क्यूं नडीं पढते थे ? अर्ज की : मैं ँरादा करता था मगर जभान पर काबू न पाता था.

करमान मुस्तफा : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم  
शकाअत करग्गा. (करमल)

आ'ला डजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ढुड इरमाते थे के मेरे उस्ताद जिन से मैं ँज्जिदाँ क्ज्जता ढा, जब मुजे सढक ढढा द्ज्जया करते, अेक द्ज्जो मर्तढा में द्ज्जेढ कर क्ज्जताढ ढन्द कर देता, जब सढक सुनते तो डई ढ डई लइज ढ लइज सुना देता. रोजाना येड डालत द्ज्जेढ कर सढ्त तअज्जुढ करते. अेक द्ज्जिन मुज से इरमाने लगे के अडमद म्ज्जयां ! येड तो कडो तुम आदमी डो या ज्जिन् ? के मुज को ढढाते देर लगती है मगर तुम को याद करते देर नडीं लगती ! आप ने इरमाया के अद्लाड का शुकर है मैं ँन्सान डी डूं डं अद्लाड عَزَّوَجَلَّ का इजलो करम शाढिले डाल है. (डयाते आ'ला डजरत, ज्जि. 1, स. 68) अद्लाड عَزَّوَجَلَّ की उन ढर रहमत डो और उन के सदके डमारी ढे डिसाढ मग्ज्जिरत डो. اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلٰى مُحَمَّدٍ

### ढहला इतवा

मेरे आका आ'ला डजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने सिई तेरड साल दस माड यार द्ज्जिन की उढ्र में तमाम मुरव्वज्ज उलूम की तकमील अपने वालिदे माज्जिद रईसुल मु-तकद्लिमीन मौलाना नकी अली ढान رَحْمَةُ الْمَنَّانِ से कर के स-नदे इरागत डसिल कर ली. ँसी द्ज्जिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अेक सुवाल के जवाढ में ढहला इतवा तडरीर इरमाया था. इतवा सडीड ढा कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के वालिदे माज्जिद ने मस्नदे ँइता आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के सिढुई कर दी और आढिर वक्त तक इतवा तडरीर



ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : મુઝ પર દુરુદે પાક કી કસરત કરો બેશક યેહ તુમ્હારે લિયે તહારત હૈ. (બુયૂહ)

ફરમાતે રહે. (એઝન, સ. 279) અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ કી ઉન પર રહમત હો  
 ઓર ઉન કે સદકે હમારી બે હિસાબ મગ્ફિરત હો.

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّد

## આ'લા હઝરત કી રિયાઝી દાની

અલ્લાહ તઆલા ને આ'લા હઝરત عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ تَعَالَى કો બે અન્દાઝા ઉલૂમે જલીલા સે નવાઝા થા. આપ رَحْمَةُ اللہِ تَعَالَى عَلَیْہِ ને કમો બેશ પચાસ ઉલૂમ મેં કલમ ઉઠાયા ઓર કાબિલે કદ્ર કુતુબ તસ્નીફ ફરમાઈ. આપ رَحْمَةُ اللہِ تَعَالَى عَلَیْہِ કો હર ફન મેં કાફી દસ્ત-રસ હાસિલ થી. ઇલ્મે તૌકીત મેં ઇસ કદર કમાલ હાસિલ થા કે દિન કો સૂરજ ઓર રાત કો સિતારે દેખ કર ઘડી મિલા લેતે. વક્ત બિલ્કુલ સહીહ હોતા ઓર કભી એક મિનટ કા ભી ફર્ક ન હુવા. ઇલ્મે રિયાઝી મેં આપ યગાનએ રૂઝગાર થે. યુનાન્યે અલીગઢ યૂનીવર્સિટી કે વાઈસ ચાન્સલર ડૉક્ટર ઝિયાઉદ્દીન જો કે રિયાઝી મેં ગૈર મુલ્કી રિઝિયાં ઓર તમગા જાત હાસિલ કિયે હુએ થે આપ رَحْمَةُ اللہِ تَعَالَى عَلَیْہِ કી ખિદમત મેં રિયાઝી કા એક મસ્અલા પૂછને આએ. ઇશાદિ હુવા : ફરમાઈયે ! ઉન્હોં ને કહા : વોહ એસા મસ્અલા નહીં જિસે ઇતની આસાની સે અર્ઝ કરું. આ'લા હઝરત عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ تَعَالَى ને ફરમાયા : કુછ તો ફરમાઈયે. વાઈસ ચાન્સલર સાહિબ ને સુવાલ પેશ કિયા તો આ'લા હઝરત عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ تَعَالَى ને ઉસી વક્ત ઉસ કા તશફફી બખ્શ જવાબ દે દિયા. ઉન્હોં ને ઇન્તિહાઈ હૈરત સે કહા કે મેં ઇસ મસ્અલે કે લિયે જર્મન જાના ચાહતા થા ઇન્તિફાકન

करमान मुस्तक़ा على الله تعالى عليه واله وسلم : तुम जहां भी हो मुज पर दुइद पढो के तुम्हारा दुइद मुज तक पहुँचता है. (طبرانی)

हमारे दीनियात के प्रोफ़ेसर मौलाना सय्यिद सुलैमान अशरफ़ साहिब ने मेरी राहनुमाँ इरमाँ और मैं यहाँ छाज़िर हो गया. यूँ मा'लूम होता है के आप ईसी मस्जले को क़िताब में देख रहे थे. डोक्टर साहिब बसद इरहत व मसरत वापस तशरीफ़ ले गये और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की शप्सियत से ईस कदर मु-तअस्सिर हुअे के दाढी रभ ली और सौम व सलात के पाबन्द हो गये. (अजान, स. 223, 229) अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सहके हमारी बे हिसाब मग़िरत हो.

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ईलावा अज़ीं मेरे आका आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ईल्मे तक़सीर, ईल्मे हैअत, ईल्मे ज़र वगैरा में ली काफ़ी महारत रभते थे.

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**हैरत अंगोळ कुव्वते हाफ़िज़ा**

हज़रते अबू हामिद सय्यिद मुहम्मद मुहदिस कछौछवी लोअी ईरमाते हें के जब दारुल ईफ़ता में काम करने के सिद्विले में मेरा बरेली शरीफ़ में क़ियाम था तो रात दिन अैसे वाक़िआत सामने आते थे के आ'ला हज़रत की छाज़िर जवाबी से लोग हैरान हो ज़ाते. इन छाज़िर जवाबियों में हैरत में डाल देने वाले वाक़िआत वोह ईल्मी छाज़िर जवाबी थी जिस की मिसाल सुनी ली नहीं गइ. म-सलन ईस्तिफ़ता (सुवाल) आया, दारुल ईफ़ता में काम करने वालों ने पढा और अैसे मा'लूम हुवा के नई

करमाने मुस्तक! صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिंक हो और वोह मुज पर दुइद शरीक न पढे तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शम्स है. (नबीये)

किस्म का हादिसा दरयाइत किया गया (या'नी नअे किस्म का मुआ-मला पेश आया है) और जवाब जुजुअय्या की शकल में न मिल सकेगा कु-कहाअे किराम के उसूले आम्मा से ँस्तिम्भात करना पडेगा. (या'नी कु-कहाअे किराम رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام के अताअे हुअे उसूलों से मस्अला निकालना पडेगा) आ'ला हजरत की ढिदमत में हाजिर हुअे, अर्ज किया : अजब नअे नअे किस्म के सुवालात आ रहे हैं ! अब हम लोग क्या तरीका ँप्तियार करें ? इरमाया : येह तो बडा पुराना सुवाल है. ँबने हुमाम ने “इत्तुल कदीर” के कुलां सईडे में, ँबने आबिदीन ने “रदुल मुडतार” की कुलां जिहद और कुलां सईडा पर (लिभा है), “इतावा खिन्दिअ्या” में, “अैरिया” में येह येह ँभारत साई साई मौजूद है अब जो किताबों को ढोला तो सईडा, सत्र और अताई गई ँभारत में अेक नुक्ते का इर्क नहीं. ँस ढुदादाद इजलो कमाल ने उ-लमा को हमेशा हैरत में रढा. (हयाते आ'ला हजरत, जि. 1, स. 210) अद्लाड عَزَّوَجَلَّ की उन पर रडमत हो और उन के सदके

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ.

किस तरड ँतने ँल्म के दरिया बडा दिये

उ-लमाअे हक की अकल तो हैरां है आज भी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सिई अेक माह में हिइअे कुरआन

जनाबे सय्यिद अय्यूब अली साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का

बयान है के अेक रोज आ'ला हजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने ँशाईद

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिंक हो और वोह मुज पर दुइदे पाक न पड़े. (म)

इरमाया के बा'ज ना वाकिफ़ उजरत मेरे नाम के आगे डाइज लिख दिया करते हैं, उलांके में ँस लकभ का अडल नहीं छूं. सय्यिद अय्यूब अली साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं के आ'ला उजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने ँसी रोज से दूर शुरुअ कर दिया जिस का वक्त गालिबन ँशा का वुजू इरमाने के बा'द से जमाअत कांम होने तक मप्सूस था. रोजाना अेक पारह याद इरमा लिया करते थे, यहां तक के तीसवें रोज तीसवां पारह याद इरमा लिया.

अेक मौकअ पर इरमाया के में ने कलामे पाक बित्तरतीब ब कोशिश याद कर लिया और येह ँस लिये के उन बन्दगाने षुदा का (जे मेरे नाम के आगे डाइज लिख दिया करते हैं) कलना गलत साबित न हो. (अेज्ज, स. 208) **اَدْلَاوَلْ عَزَّ وَجَلَّ كِي उन पर रडमत हो और उन के सदके उमारी बे हिसाब मगिरत हो.**

اَمِيْنِ بِجَاوِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

**صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

**धरके रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

मेरे आका आ'ला उजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ँशके मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का सर ता पा नुमूना थे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का ना'तिया दीवान “उदांठके बप्शिश शरीफ़” ँस अत्र का शाहिद है. आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की नोके कलम बल्के गहरांये कलब से निकला हुवा डर मिस्तरआ मुस्तफ़ा जाने रडमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ





करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुइदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुइदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये भगकिरत है. (भाग)

या'नी टुकडा. मतलब येह के मेरा दीन “रोटी का टुकडा” नहीं है के जिस के लिये मालदारों की पुशामदें करता किंउं.

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَيِّبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ عَلَى مُحَمَّدٍ

बेदारी में दीदारे मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मेरे आका आ'ला उजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ दूसरी बार उज के लिये हाजिर हुअे तो मदीनअे मुनव्वरह شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में नबिय्ये रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जियारत की आरजू लिये रौजअे अत्तर के सामने देर तक सलातो सलाम पढते रहे, मगर पहली रात किस्मत में येह सआदत न थी. ँस मौकअ पर वोह मा'इक ना'तिया गजल लिभी जिस के मतलअ में दामने रहमत से वाबस्तगी की उम्मीद दिभाई है :

वोह सूअे लालाजार किरते हें

तेरे दिन अै बहार किरते हें

शहें कलामे रज्ज : अै बहार जूम ज ! के तुज पर बहारों की बहार आने वाली है. वोह देअ ! मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सूअे लालाजार या'नी जानिबे गुलजार तशरीक ला रहे हें ! मक्तअ में बारगाडे रिसालत में अपनी आजिजी और बे मा-यगी (या'नी मिसकीनी) का नकशा यूं पीया है :

कोई क्यूं पूछे तेरी बात रज्ज

तुज से शैदा उजार किरते हें





किरमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने किताब में मुज पर दुइदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये ईस्तिफकार करते रहेंगे. (७/७)

## सीरत की आ'ल मल्कियां

मेरे आका आ'ला उजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं : अगर कोई मेरे दिल के दो टुकड़े कर दे तो अेक पर ﷺ और दूसरे पर (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) लिखा हुवा पायेगा.

(सवानेहे ँमाम अडमद रजा, स. 96, मक्तबअे नूरिया र-जविया सफ्पर)

ताजदारे अडले सुन्नत, शहजादअे आ'ला उजरत हुजूर मुफ्तिये आ'लमे हिन्द मौलाना मुस्तफा रजा पान رَحْمَةُ الْحَنَانِ عَلَيْهِ  
“सामाने बफिशश” में इरमाते हैं :

पुदा अेक पर डो तो ँक पर मुहम्मद

अगर कलब अपना दो पारा कइं मैं

मशाँभे जमाना की नजरों में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ वाकेई इनाकिरसूल थे. अकसर फिराके मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم में गमगीन रहते और सई आहें बरा करते. पेशावर गुस्ताफों की गुस्ताफाना ँबारात को देपते तो आंफों से आंसूओं की जड़ी लग जाती और प्यारे मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की हिमायत में गुस्ताफों का सपती से रद करते ता के वोड जुंजला कर आ'ला उजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को बुरा कलना और लिपना शुइअ कर दें. आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अकसर ँस पर इफ्र किया करते के बारी तआला ने ँस दौर में मुजे नामूसे रिसालत मआब के लिये ढाल बनाया है. तरीके ँस्ति'माल येह है के बद गोर्यों का सपती और तेज कलामी से रद करता हूं के ँस तरड वोड मुजे बुरा बला कलने में मसइइ डो जाअें. उस वक्त तक के लिये

करमाने मुस्तफ़ा عليه وآله وسلم : जिस ने मुज़ पर अेक बार दुइडे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रहमतेँ भेजता है. (म.)

आकाअे दो जहां जहाँ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शान में गुस्ताफी करने से भये रहेंगे. उदाईके अज्शिश शरीफ़ में इरमाते हैं :

कइं तेरे नाम पे जं किंदा न अस अेक जं दो जहां किंदा

दो जहां से भी नहीं ज़ु भरा कइं क्या करोजें जहां नहीं

गु-रबा को कभी ખाली हाथ नहीं लौटाते थे, हमेशा गरीबों

की ईमदाद करते रहते. अलके आबिरी वक्त भी अजीजो अकारिब को वसियत की के गु-रबा का पास खयाल रखना. ईन को खातिर दारी से अख्छे अख्छे और लजीज खाने अपने घर से खिलाया करना और किसी गरीब को मुत्लक न जिउकना.

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه अकसर तस्नीफ़ व तालीफ़ में लगे रहते.

पांयों नमाजों के वक्त मस्जिद में हाजिर होते और हमेशा नमाज बा जमाअत अदा इरमाया करते, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه की पूराक अहुत कम थी.

### दौराने भीलाद बैठने का अन्दाज

भेरे आका आ'ला उजरत ईमाम अहमद रजा खान

مَحْفِظُ الْمَلِكِ عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ महफ़िले भीलाद शरीफ़ में जिंके विलादत शरीफ़ के वक्त सलातो सलाम पढने के लिये ખडे होते बाकी शुइअ से आबिर तक अ-दभन दो जानू बैठे रहते. यूं ही वा'ज इरमाते, यार पांय घन्टे कामिल दो जानू ही मिम्बर शरीफ़ पर रहते. (अैज्ज, स. 119, हयाते आ'ला उजरत, जि. 1, स. 98) काश ! हम गुलामाने आ'ला उजरत को भी तिलावते कुरआन करते या सुनते वक्त नीज

करमाने मुस्तफ़ि صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुइदे पाक पढना भूल गया वोड जन्त का रास्ता भूल गया. (अ. 1)

ँजतिमाअे जिक्को ना'त, सुन्नतों तरे ँजतिमाआत, म-दनी मुजा-करात, दर्स व म-दनी डलकों वगैरा में अ-दबन दो जानू भैठने की सआदत मिल जाअे.

### सोने का मुन्फ़रिद अन्दाज

सोते वक्त डाय के अंगूठे को शडदत की उंगली पर रभ लेते ता के उंगलियों से लफ़्ज “अद्लाड (الله)” बन जाअे. आप َحَمْدُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ पैर डैला कर कभी न सोते बडके दाडिनी (या'नी सीधी) करवट लैट कर दोनों डायों को मिला कर सर के नीचे रभ लेते और पाँउं मुबारक समेट लेते, ँस तरड जिस्म से लफ़्ज “मुडम्मद (محمد)” बन जाता. (डयाते आ'ला डजरत, जि. 1, स. 99, वगैरा) येड हैं अद्लाड َعَزَّ وَجَلَّ के याडने वालों और रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सख्ये आशिकों की अदाअें

नामे भुदा है डाय में नामे नभी है जात में

मोडरे गुलामी है पडी, लिभ्मे डुअे हैं नाम दो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ عَلَى مُحَمَّدٍ

**द्रेन रुकी रही !**

जनाभे सख्यिद अख्यूअ अली शाड साडिअ َحَمْدُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ करमाते हैं के मेरे आका आ'ला डजरत َحَمْدُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ओक बार पीलीभीत से बरेली शरीफ़ अ डरीअअे रेल जा रहे थे. रास्ते में नवाअ गन्ज के स्टेशन पर जडं गाडी सिर्फ़ दो मिनट के लिये ठडरती है, मगरिअ का वक्त डो युका था, आप َحَمْدُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने गाडी ठडरते डी तकभीरे ँकामत करमा

इरमाने मुस्तफा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइडे पाक न पढा तहकीक वोड  
 भदभप्त हो गया. (उरुदा)

कर गाडी के अन्दर ही निच्यत बांध ली, गालिबन पांय शप्सों  
 ने ँक्तिदा की उन में मैं ली था लेकिन अली शरीके जमाअत  
 नही होने पाया था के मेरी नजर गैर मुस्लिम गार्ड पर पडी जो  
 प्लेट फॉर्म पर भडा सज्ज जन्डी छिला रहा था, मैं ने प्ठिडकी से  
 जंक कर देभा के लाँन क्लियर थी और गाडी छूट रही थी,  
 मगर गाडी न चली और लुजूर आ'ला हजरत ने ब ँत्मीनाने  
 तमाम बिला किसी ँजतिराब के तीनों इर्ज रकुअतें अदा कीं  
 और जिस वक्त दाँँ जनिब सलाम इैरा था गाडी चल दी.  
 मुक्तदियों की जवान से बे साप्ता سُبْحَانَ اللَّهِ سُبْحَانَ اللَّهِ سُبْحَانَ اللَّهِ निकल  
 गया. ँस करामत में काबिले गौर येह बात थी के अगर  
 जमाअत प्लेट फॉर्म पर भडी होती तो येह कडा जा सकता था  
 के गार्ड ने अेक बुजुर्ग हस्ती को देभ कर गाडी रोक ली होगी  
 अैसा न था बल्के नमाज गाडी के अन्दर पढी थी. ँस थोडे  
 वक्त में गार्ड को क्या भबर हो सकती थी के अेक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ  
 का मडभूभ बन्दा इरीजअे नमाज गाडी में अदा करता है.  
 (अैजन, जि. 3, स. 189, 190) अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत  
 हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मगिइरत हो.

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

वोड के उस दर का हुवा भल्के भुदा उस की हुई  
 वोड के उस दर से इिरा अल्लाह उस से इिर गया

(हदाँके बप्शिश शरीक)

शहँे कलामे रज्ज : जो कोई सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का मुतीओ इरमां भरदार हुवा मप्लूके

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतभा सुब्द और दस भरतभा शाम दुइडे पाक पढा  
(उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्राअत मिलेगी. (रुकी/रुकी)

परवर दगार उस की ँताअत गुजार ढो गँ और जो कोँ  
दरभारे डुजुरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से दूर डुवा वोँ  
भारगाँे रँभे गँर्रु र्रु से भी दूर ढो गया.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### तसानीँ

मेरे आका आ'ला डजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने मुप्तलिक  
उन्वानात पर कमो भेश अेक डजार क़िताभें लिखी हैं. यूं तो आप  
رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने 1286 सि.डि. से 1340 सि.डि. तक लाभों इतवे  
दिये ढोंगे, लेकिन अँसोस ! के सभ नकल न किये जा सके, जो  
नकल कर लिये गअे थे उन का नाम “अल अतायन्न-भविय्यड इ़िल  
इतावरर-अविय्यड” रभा गया. इतावा र-अविय्या (मुभर्रजा) की 30  
जिल्दें हैं जिन के कुल सँँात : 21656, कुल सुवालात व जवाभात  
: 6847 और कुल रसाँल : 206 हैं. (इतावा र-अविय्या मुभर्रजा, जि.  
30, स. 10, रज ँउन्देशन, मँँुल औलिया लाँोर)

कुरआन व डदीस, इ़िकड, मन्तिक और कलाम वगैरा में  
आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की वुसअते न-जरी का अन्दाजा आप  
رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के इतावा के मुता-लअे से ढी ढो सकता है. कयूंके आप  
رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के डर इतवे में दलाँल का समुन्दर भोजजन है. आप  
رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के सात रसाँल के नाम मुला-डजा ढों :

﴿1﴾ “सुब्दानुस्सुब्बूड अन अैबि क़िजबिन मकबूड” सअ्ये षुद

पर जूट का भोडतान भांधने वालों के रद में येँ रिसाला तँरीर इरभाया

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुइद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (मैराज)

जिस ने मुफ़ालिफ़ीन के दम तोड दिये और कलम नियोड दिये ﴿2﴾ मकामिउल उदीद ﴿3﴾ अल अम्नु वल उला ﴿4﴾ तजल्लिय्युल यकीन ﴿5﴾ अल कौ-क-बतुशशहाबियल ﴿6﴾ सल्लुस्सुयूफ़िल खिन्दिय्यल ﴿7﴾ उयातुल मवात.

ँलम का यशमा हुवा है मोजअन तडरीर में

जब कलम तूने उढाया अै ँमाम अडमद रअ

(वसाँले बअिशश, स. 536)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تَر-ज-मअे कुरआने करीम

मेरे आका आ'ला उअरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने कुरआने करीम का तरजमा किया जो उर्दू के मौजूदा तराजिम में सब पर फ़ाँक (या'नी फ़ौकियत रपता) है. तरजमे का नाम “कन्जुल ँमान” है जिस पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के फ़लीफ़ा उअरते सदरुल अफ़जिल मौलाना सय्यिद मुहम्मद नँमुदीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बनामे “अअाँनुल ँरफ़ान” और मुफ़रिसरे शहीर उकीमुल उम्मत उअरते मुफ़ती अडमद यार आन رَحْمَةُ الْخَنَّانِ ने “नूरुल ँरफ़ान” के नाम से ढाशिया लिफ़ा है.

वफ़ाते हसरत आयात

आ'ला उअरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपनी वफ़ात से 4 माह 22 दिन पढले फ़ुद अपने विसाल की अबर दे कर पारल 29 सू-रतुदुइर की आयात 15 से साले ँन्तिकाल का ँस्तिअराज इरमा दिया था.

करमाने मुस्तफ़ा ﷺ على الله تعالى عليه وآله وسلم : जो मुज पर रोज़े जुमुआ दुइद शरीफ़ पडेगा में क़ियामत के दिन उस की शक़ाअत करेगा. (क़ुरआन)

ँस आयते शरीफ़ा के ँल्मे अ७जद के हिसाब से 1340 अदद बनते हैं और येही ह़िजरी साल के अ'तिबार से सने वक़ात है. वोह आयते मुबा-रका येह है :

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِانْبِيَةٍ مِّنْ فَصَّةٍ  
وَأَكْوَابٍ (پ ۲۹، الدهر: ۱)

तर-ज-मअे कन्जुल ँमान : और उन पर यांही के भरतनों और कूओं का दौर डोगा.

(सवानेडे ँमाम अडमद रज्ज, स. 384)

25 स-इरुल मुजइइर 1340 ह़ि. मुताबिक 28 अक्तूबर 1921 ँ. को जुमुअतुल मुबारक के दिन ह़िन्दूस्तान के वक्त के मुताबिक 2 बज कर 38 मिनट (और पाकिस्तानी वक्त के मुताबिक 2 बज कर 8 मिनट) पर, अैन अजाने जुमुआ के वक्त हुवा. आ'ला हज़रत, ँमामे अडले सुन्नत, वलिये ने'मत, अजीमुल भ-र-कत, अजीमुल मर्तभत, परवानअे शम्भे रिसालत, मुजदददे दीनो मिल्दत, ह़ामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीकत, भाँसे भैरो भ-र-कत, हज़रते अद्लामा मौलाना अलहाज अल ह़ाईज अल कारी शाह ँमाम अडमद रज्ज भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने दाँये अजल को ल७भौक कडा. اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُونَ ० आप ह़ामिरे पुर अन्वार मदीनतुल मुर्शिद भरेली शरीफ़ में आज भी ज़ियारत गाडे भासो आम है. अद्लाह ज़ेज की उन पर रडमत डो और उन के सदके डमारी भे ह़िसाब मग़िरत डो.

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاٰمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइटे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे बिचे तछारत है. (अहमद)

तुम क्या गये के रौनके मछड़िल यली गध

शे'रो अहम की जुल्फ परेशां है आज भी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ عَلَى مُحَمَّدٍ

हरबारे रिसालत में धन्तिजार

25 स-इरुल मुजफ़्फ़र को बैतुल मुकदस में अक शामी बुजुर्ग

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने ज्वाब में अपने आप को हरबारे रिसालत

مِنْ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में पाया. सहाबअे किराम الرضوان عَلَيْهِمُ हरबार में

छाजिर थे, लेकिन मजलिस में सुकूत तारी था और अैसा मा'लूम

होता था के किसी आने वाले का धन्तिजार है, शामी बुजुर्ग

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में अर्ज की :

हुजूर ! (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) मेरे मां बाप आप पर कुरबान हों

किस का धन्तिजार है? सख्यिटे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने धर्शाद

करमाया : हमें अहमद रजा का धन्तिजार है. शामी बुजुर्ग ने अर्ज

की : हुजूर ! अहमद रजा कौन हैं? धर्शाद हुवा : हिन्दूस्तान में

भरेली के बाशिन्दे हैं. बेदारी के बा'द वोह शामी बुजुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

मौलाना अहमद रजा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की तलाश में हिन्दूस्तान की

तरफ़ यल पडे और जब वोह भरेली शरीफ़ आये तो उन्हें मा'लूम

हुवा के इस आशिके रसूल का उसी रोज (या'नी 25 स-इरुल

मुजफ़्फ़र 1340 हि.) को विसाल हो युका है. जिस रोज उन्होंने ने

ज्वाब में सरकारे आली वकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को येह कहते

सुना था के “हमें अहमद रजा का धन्तिजार है.” (सवानेहे ईमाम



(طبرانی) : کرمانہ مستحق علیہ والہ وسلم : तुम जहां भी हो मुज पर दुइद पढो के तुम्हारा दुइद मुज तक पढीयता है.

अहमद रजा, स. 391) अल्हाडु एरु वरु की उन पर रहमत हो और उन के सहके हमारी बे हिसाब मगिरत हो.

امین بجاہ النبی الامین صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

या हलाही जब रजा प्वाबे गिरां से सर उदाये

हौलते बेदारे हशके मुस्तफा का साथ हो

(हदाहके बफिशश शरीफ)

امین بجاہ النبی الامین صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

सगे गौसो रजा

मुहम्मद हत्यास काहिरा २-अवी हफे हने

हफता 25 स-इरुल मुजहफर 1393 हि.

(अ मुताबिक 31-3-1973)

### येह रिसाला पढ कर दूसरे को हे दीजिये

शादी गभी की तकरीबात, हजतिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाह वगैरा में मक-त-अतुल मदीना के शाअेअ कर्दा रसाहल और म-हनी हूलों पर मुशतमिल पेफ्लेट तकसीम कर के सवाब कमाहये, गाहकों को ब नित्यते सवाब तोहके में हेने के लिये अपनी हुकानों पर भी रसाहल रहने का मा'मूल बनाहये, अफ्बार इरोशों या बख्यों के जरीअे अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज कम अेक अहद सुन्नतों बरा रिसाला या म-हनी हूलों का पेफ्लेट पहोंया कर नेकी की हा'वत की धूमें मयाहये और पूब सवाब कमाहये.